

१ रघुगोपायनमः॥ १ पुन वस्य वक्रसृष्टिर्वीगमयतीकृदः॥ पुन
 मासादवना श्रुवीकुं मुक्ति मंकीलकी॥ विदनादतिप्रियकारैश्री
 तिममात्माममसर्वकर्मो नरु॥ प्राप्तायामअथविनियोगा॥ १३ रुद्रव
 ४ स्वरु रसमस्य पिपलादिमृष्टि र्योगीकृदः॥ श्रीकालाग्नि रुद्रा देवता
 रसमकी नरु अथविनियोगः॥ अथ श्रीनरु॥ १३ त्रिनेत्रे त्रिनेत्रे त्रिनेत्रे
 पुनवकुं त्रिपाद वद्वि नयने रसमकूठेति विग्रहः॥ ती३ वां वनरु रसम नरु
 पुष्पापिष्ठा रिते॥ नरु मं त्रु रसम देव श्री स्वाग्निं लल्य नन नरु॥ नरु श्री स्वावि
 ७ धने रसम नोका नरु कृ नरु॥ नरु श्री पाहि नीदि वि विरु गिरु मि सं दा रव नरु

॥ॐ त्रिमिमृतिरस्मीं जलमृतिरस्मीं स्कलमृतिरस्मीं वायूमृतिरस्मीं वा
ममृतिरस्मीं ॥ मनःसाहितानि चक्षुर्धर्मदियानि रस्मानि सर्वस्वाहाय न
मः ॥ ॐ नमः ॥ धीर्नैदिकस्वनाय नमः ॥ वंदितो धीस्त्रैदं न वक्रम
संकननच ॥ तस्यूरुषाय नमः ॥ अथा नाय नमः ॥ वामदेवाय नमः ॥ सर्वग
सुधाजा नाय नमः ॥ अथ विरूतिमर्तु ॥ इयं वरकं जजामहसिर्गंध पूष्टिविव
धनी ॥ ॐ वीरुकी ववधनातमिस्थोशोभाश्च यमामृता ॥ ॐ नमः ॥ शिवाय
अथ कनसंपूर्तं कृत्वा ॥ ॐ हिरमं ॥ अथ वरुनी रस्मी शाश्वी दीपवताय न
मः ॥ अंगुष्ठनाली नमः ॥ प्रदक्षिणं कृत्वा वक्रं नृपुनि वाणिनी ॥ ॐ नमः ॥ रगव

नैवक्रान्ति नमः ॥ अथ पंचवक्रं धूति ॥ ॐ सां नमः ॥ स्य ॥ सां नमः ॥ दवता इवी
सा मृषि नमः ॥ ॐ दः ॥ ॐ सां नमः ॥ सां नमः ॥ सां नमः ॥ ॐ सां नमः ॥
सर्वविद्यानां ॥ ॐ नमः ॥ सर्वरूपाणां ॥ ॐ नमः ॥ विपति ॥ ॐ नमः ॥ विपति ॥ ॐ नमः ॥
सदा शिवा मिमिनि नमः ॥ ॐ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
कमृषि देवी अयणी ॐ दः ॥ ॐ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
रमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

वामबाहू नमः पूरु जनाय नमः॥ पूरु रु नाय नमः॥ कूकोरुफसमूदाय
 नमः॥ विष्णुपुजाय नमः॥ जानूनिजाद्रु वाय नमः॥ कूर्मचक्रवागाहा
 य नमः॥ पातालोवाहू की त्या नमः॥ पादारु सर्वतीर्थाय नमः॥ काटिपुद
 र्ग का ला नि रूपाय नमः॥ मल नील कं भनमः॥ मूर्ध्नि यत्र मात्मने सदा वि
 वाय नमः॥ ॐ वि वि रु ति धी न र्ही कं स्वा वि रु ति निर्धु नं ज न ग व क्क ल्म
 श्रु न्म जा ग क श्म प ती ति न र क धा न या व द्ध क्रा व रु र्म षं ॥ ग व स्य ति न न र
 रु मी रु स्य न्य त्र न मा न वा ॥ अ ध य र्ग न प ह मी वं स्व द वं स्व ना र्जु न ॥ धृ ता
 वि पू र्ण रं कृ त्वा मृ त्वा य नं मा न वा ॥ म ध्म मा ना मि की गु ष्ठ वि पू र्ण रं रु स्य

नाधुनी ॥ वि पू र्ण रं रु वं रु मा हा पा ग क ना स र्जं वि पू र्ण रं व क्क ल्म वि द्वा न्म
 न सा पि न ल घ य ग् ॥ गु ष्ठा वि धी य न रु स्य ना त्या गी नी य ति ना रु व त् ॥ अ ल
 स्ना ना त् वि रु ति स्ना न ॥ का ठि का ठि गु न्म धि कं त स्मा न् रु स व वि रु ति स्ना न म
 र्गं स मा च त्र ग् ॥ स र्व गी र्थ पू य र्ग र्थं स र्व य र्ग र्थं र्थं ॥ तं रु लं स म वा
 धा मि रु स्ना ना त् न र्गं स य द्वा रु स स्ना ना त् य त्र ति र्थं र्गं म स्ना ना दि ने दि
 न ॥ रु स रू पी नि रु सा द्वा रु स र्गं लो क्क पा व नी ॥ ॐ वि ण्मि नी नं द क र्थ
 न पू ना न् ॥ ॐ का ला नि रू पा य नि ष द सै पू र्ण ॥ ॥ सं २०० ॥ रु र

